ELEMENTS OF NATIONAL POWER
राष्ट्रीय शक्ति के तत्व

COURSE CODE : POLS4008

COURSE NAME : *THEORIES OF INTERNATIONAL RELATIONS*

DR. NARENDRA KUMAR ARYA

ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
MAHTAMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY, BIHAR

संकल्पनात्मक परिचय

- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की जटिलता को समझाने के लिए राष्ट्रीय शक्ति और राष्ट्रीय हित की संकल्पनाओं को समझना ज़रूरी है.
- राष्ट्रों के व्यवहार को निर्धारित करने में राष्ट्रीय शक्ति के तत्वों की अहम् भूमिका होती है.
- इसे हम किसी राष्ट्र की विदेश नीति –उसके उद्देश्य,लक्ष्यों और व्यावहारिक आचरण के रूप में और उसे निर्धारित करने वाले अहम तत्व के रूप में समझ सकते है राष्ट्रीय शक्ति कई प्रकार के तत्वों और कारकों के संयोजन पर निर्भर करती है
- फिर भी यह कहना कठिन है कि राष्ट्रीय शक्ति जिनसे मिलकर बनती उन तत्वों की सटीक और अंतिम सूची क्या है । इस बावजूद राष्ट्रीय शक्ति के कुछ तत्वों को निर्धारित करने का प्रयास किया गया है .

- इन्हें इनके स्वरुप के आधार पर स्थिर और अस्थिर, मूर्त और अमूर्त, मानव और गैर-मानव आदि वर्गों में रखा जाता है ।
- प्राय: सभी तत्व परस्पर संबंधित और एक-दूसरे पर आश्रित होते हैं। हमेशा इनका मापन बहुत बारीकी व् सटीकता के साथ नहीं किया जा सकता है।
- केवल अनुमान लगाया जा सकता है। सटीक अनुमान भी हमेशा संभव नहीं होता है क्योंकि वे प्राकृतिक और तकनीकी कारणों से निरंतर संरचनात्मक और सापेक्षिक परिवर्तनों से गुजरते हैं।
- **मोर्गेंथु** ने उन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया है **स्थायी** और **परिवर्तनशील**। अपेक्षाकृत स्थिर तत्व भूगोल और प्राकृतिक संसाधन हैं जबकि निरंतर परिवर्तन के अधीन तत्व सैन्य तैयारी, जनसंख्या, राष्ट्रीय चरित्र और मनोबल, कूटनीति और सरकार हैं.
- और्गंसकी(Organski) ने उन्हें **प्राकृतिक** और **सामाजिक निर्धारकों** में वर्गीकृत किया।

राष्ट्रीय शक्ति के तत्वों का वर्गीकरण हम निम्न प्रकार कर सकते हैं:-

- **प्राकृतिक तत्व** जैसे कि भूगोल, प्राकृतिक संसाधन और जनसंख्या।
- **वैज्ञानिक और तकनीकी तत्व** जैसे कि प्रौद्योगिकी और औद्योगिक क्षमता, कृषि क्षमता और सैन्य शक्ति।
- **राजनीतिक तत्व** जैसे कि सरकार का प्रकार , नौकरशाही संगठन और दक्षता, राजनीतिक नेतृत्व का ज्ञान और कूटनीति की गुणवत्ता।
- **सामाजिक और वैचारिक तत्व।** विचारधारा, राष्ट्रीय मनोबल, राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक संरचना और सामाजिक सामंजस्य।
- **बाहरी और अन्य तत्व।** प्रतिष्ठा और छवि, विदेशी समर्थन, अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिक स्थिति और बुद्धिमत्ता।

- **नेपोलियन** ने एक बार कहा था कि, " किसी देश की विदेश नीति उसके **भूगोल** से निर्धारित होती है।" भौगोलिक कारकों में भौगोलिक स्थिति,आकार, वातावरण, प्राकृतिक संसाधन इत्यादि हैं.
- **जनसंख्या** राष्ट्रीय शक्ति का मूर्त तत्व है। इसका आकार, गुणवत्ता, सांस्कृतिक मूल्य, नैतिक बल, एकीकरण, विकास , औद्योगिक या कृषि गतिविधियों में संलग्नता,सौहार्दय इत्यादि
- **अवस्थान** : देश की सुरक्षा और बाहरी दुनिया के साथ इसके स्थानिक संबंध को निर्धारित करता है। इंग्लैंड और जापान द्वीप समूह अधिक सुरक्षित रहे हैं। इसी तरह, संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोप और एशिया से अलग होने के कारण लंबे समय तक अलगाव में रह सका और विकास कर सका. भारत के तीन तरफ समुद्र और उत्तर में हिमालय अच्छे **अवस्थान** का उदाहरण है.

- **क्षेत्र** एक महत्वपूर्ण तत्व है जो राज्य की शक्ति को निर्धारित करता है। क्षेत्रीय विशेषताएं जैसे कि सीमाएँ, जलवायु रणनीतिक स्थान, भूमि और जलमार्ग की प्रकृति राष्ट्रीय शक्ति को बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, एक पहाड़ी देश को दुश्मन के लिए पार पाना मुश्किल है.
- **प्राकृतिक संसाधन** उदाहरण के लिए झरना, मिट्टी, तेल, लोहा, तांबा, गैस और कोयला आदि की उर्वरता। उदाहरण के लिए, कुवैत बहुत छोटा राज्य है लेकिन समृद्ध तेल संसाधनों के कारण यह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- **प्रौद्योगिकी** आज के समय में बहुत ही महत्पूर्ण है जो सैनिक, सामरिक, वितीय,सामजिक, राजनीतिक , औद्योगिक , कृषि, शिक्षा, अनुसंधान और विकास इत्यादि सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है. परमाणु और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी देशोंनो की राष्ट्रीय शक्ति को विशेष बल प्रदान करते हैं. उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका , चीन जापान फ्रांस, जर्मनी जैसे देशों की प्रगति में प्रौद्योगिकी का महतवपूर्ण भूमिका है.
- **आर्थिक विकास** एक ऐसी प्रक्रिया है जो न केवल राज्यों के आर्थिक संबंधों बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों को भी प्रभावित करती है। यह राष्ट्रीय शक्ति की वृद्धि में एक महत्वपूर्ण और योगदान कारक भी है। उच्च औद्योगिक विकास वाले देश प्राय: अधिक ताकतवर भी हैं.
- **राजनीतिक संरचना** भी राष्ट्रीय शक्ति को निर्धारित करती है तकनीक, जनसंख्या या मानव संसाधनों या प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता भी कमज़ोर राजनीतिक संरचना के कारण मूल्यहीन हो सकती है.

- **सैन्य उन्नति** विदेश नीति का समर्थन करने और राष्ट्रीय को बढ़ावा देने में सक्षम सबसे स्पष्ट और मूर्त कारक है
- राष्ट्रीय राज्य की राष्ट्रीय शक्ति अपने राजनयिकों द्वारा अपनाई गई **कूटनीति** की गुणवत्ता से बहुत अधिक निर्धारित होती है। मोर्गेन्थाऊ के अनुसार "राज्य की कूटनीति की गुणवत्ता शक्ति के अन्य तत्वों को दिशा और भार देती है।" कूटनीति अंतरराष्ट्रीय संघर्षों को हल करने की एक पूरी विधि है। भूगोल के संसाधनों, तकनीकों, सांस्कृतिक और सैन्य प्रतिष्ठान के बारे में जानकारी को कम करके, व्यापार के लिए नए अवसरों की खोज करके, कूटनीति विदेश में अपने लोगों की रक्षा करके राज्य के हित की सेवा कर सकती है। सामाजिक प्रणाली और सामंजस्य:
- यह सामाजिक तत्व अस्थिर होने के साथ-साथ अमूर्त भी है। यदि समाज एकीकृत और समन्वित है तो वह एकीकृत प्रयास में सक्षम होगा जो उसकी शक्ति को और मजबूत करेगा। दूसरी ओर अगर यह विघटित हो जाता है और आंतरिक असंतोष से ग्रस्त हो जाता है, तो यह राष्ट्र की शक्ति और प्रतिष्ठा को कमजोर कर देगा।

राष्ट्रीय शक्ति के अमूर्त तत्व

- आधुनिक काल में समाजवाद, साम्यवाद, लोकतंत्र, उदारवाद और राष्ट्रवाद की विचारधाराओं की अंतर्राष्ट्रीय अपील है**। विचारधारा** राष्ट्रीय शक्ति का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि विचारधारा राष्ट्रों के बीच एकता पैदा करती है और लोगों के लिए सामान्य हित की भावना का निर्माण करती है। उदाहरण के लिए, सोवियत और चीनी राष्ट्रीय शक्ति साम्यवाद की विचारधारा से जुड़ी है। एक विचारधारा जीवन, समाज या सरकार के बारे में विचारों का एक समूह है।
- **नेतृत्व :**राष्ट्रीय शक्ति के अन्य तत्वों के साथ राजनीतिक , कूटनीतिक और सैन्य नेतृत्व का गहरा संबंध है क्योंकि यह उन तत्वों के विस्तार के उपायों में से एक है जो उन तत्वों का उपयोग करते हैं।

- सक्षम नेतृत्व के बिना एक राष्ट्र को मजबूती, विकास ,दिशा, लक्ष्यों प्रति चेतना, उत्तेजना या मनोबल प्राप्त नहीं हो सकता। लेनिन, स्टालिन, नेहरु, और चर्चिल जैसे लोगों ने अपने लोगों और देशों के भाग्य को बदल दिया। इसी कड़ी में हैं **राष्ट्रीय चरित्र** और **मनोबल**

- कई विद्वानों ने बाहरी तत्वों को पूरी तरह से अनदेखा कर रहे हैं। ये बाहरी कारक किसी भी तरह से राष्ट्र की शक्ति का निर्धारण करने में आंतरिक लोगों की तुलना में कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। कुल्लुम्बिस और वोल्फ , लेर्चे और सईद ने इन पर काफ़ी जोर दिया है.
- **छवि :**यदि किसी राज्य की एक अनुकूल छवि है, तो इसकी आवाज़ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुनी जाएगी। उदाहरण के लिए, नेहरू के अधीन भारत की पिछड़ेपन और सैन्य कमजोरी के वावजूद, एक अच्छी छवि थी। गांधीवादी विरासत, गुटनिरपेक्षता की नीति और नेहरू के गतिशील नेतृत्व के कारण इसे अच्छी प्रतिष्ठा मिली। दोनों महाशक्तियों ने इससे दोस्ती करने की कोशिश की। कई तीसरी दुनिया के देशों ने महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अपने मार्गदर्शन की मांग की। यदि किसी राज्य में एक अच्छा सेनानी होने की प्रतिष्ठा है, तो प्रतिद्वंद्वी उस पर हमला करने से पहले सौ बार सोचेगा।
- **प्रतिष्ठा** एक निवारक के रूप में कार्य करती है और राज्य को कुछ शक्ति की स्थिति प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। विभिन्न युद्धों में इज़राइल ने अरबों को वश में किया और एक कठिन सेनानी की प्रतिष्ठा हासिल की

- **खुफियातंत्र** सक्षम होने से राष्टों के पास बाहरी दुश्मनों और दोस्तों की ताकत और कमजोरी का पूरा ज्ञान होता है। इस तत्व के महत्व को ध्यान में रखते हुए विभिन्न देशों की खुफिया एजेंसियों और जासूसों का अपना नेटवर्क है, जैसे कि यूएसए का सीआईए, यूएसएसआर का केजीबी और भारत का रॉ।
- **विदेशी सहायता, मित्रता,विदेशी समर्थन और पारस्परिक आदान –प्रदान** भी राष्ट्र शक्ति को प्रभावित करता है. इन कारकों में गठबंधन, विदेशी आर्थिक और सैन्य, महान शक्तियों को रणनीतिक ठिकानों के पट्टे या अनुदान, और क्षेत्रीय और सार्वभौमिक अंतर्राष्ट्रीय संगठन और कार्रवाई में भागीदारी इत्यादि हैं । इन पहलुओं के सन्दर्भ में पाकिस्तान, सीरिया और इजरायल को देख सकते हैं.

इस तरह राष्ट्रीय शक्ति की अवधारणा कई

- तत्वों ,
- परिस्थितियों,
- दशाओं,
- दृष्टिकोणों ,
- उपागमों,
- वैश्विक-दर्शनों व्
- दशाओं का समुच्चय है जिसका मतलब अलग-अलग समय और
- परिस्थितियों

के अनुसार निरंतर परिवर्तनशील होता रहता है.

!!!! धन्यवाद !!!!